पेज -(1)
B.A. III

विनय पटेल / हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज

अन्याय का प्रतिकार करने का यह भी एक तरीका है। जब वह अपने प्रेम-भाजन की खातिर जला देती है और दूसरे पर चिनगारियाँ गिराती है तो पाठक का मनोविनोद भी होता और पात्रों की गति बनने से तृप्त भी। वह क्रोध छिपाना नहीं जानती, वह प्रेमचन्द के उन नारी पात्रों का लम्बा सिलसिला धारण करती है जो अपने शील से पुरुषों को चुनौती देती हैं।

वह सदन से कहती है- "... तुमने उसके साथ यह अत्याचार केवल इसीलिए किया कि मैं उसकी बहन हूँ, जिसके पैरों पर तुमने बरसों नाक रगड़ी है। जिसके तलवे तुमने बरसों सहलाए हैं जिसके कुत्सित प्रेम में तुम महीनों मतवाले रहते थे। उस समय भी तो तुम अपने माँ-बाप के आज्ञाकारी पुत्र थे पा

कोई और थे? उस समय भी तो तुम नहीं उच्च कुल के ब्राह्मण थे या कोई और थे? तब तुम्हारे कुकर्मों से खानदान को नोक न करती थी? आज तुम आकाश के देवता बने फिरते हो। अँधेरे में जो स्वीकार था पर उजाले में निमंत्रण भी स्वीकार नहीं।"

सुमन के सात्विक और संयमी जीवन का ही प्रभाव था कि साधु बन गया उसका पति गजानन्द उसके चरणों में गिर कर अपने अपराधों की क्षमा माँगता है। उसने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि - "अपने अत्याचार का भीषण परिणाम देखकर मुझे विदित हो रहा है कि उसका प्रायश्चित नहीं हो सक

गजाधर की इस आत्मवेदना तथा पश्चाताप की अग्नि में जलता हुआ देखकर ही वह बोली — हे ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि तुम्हारे अपराधों को क्षमा करे।" गजाधर के समझाने पर कि अब तक तुम अपने लिए जीती थी अब दूसरों के लिए जियो। हार मान जाती है और अपने जीवन का उत्सर्ग दूसरों की सेवा के लिए ही कर देती है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि सुमन का चरित्र कथा के केन्द्र में है और कथा में आये प्रायः सभी पात्र उसके चारों ओर घूमते दिखाई पड़ते हैं। या उसके बारे में सोचते हैं अथवा उससे किसी न किसी प्रकार से सम्बन्धित हैं। सेवासदन उपन्यास की मूल समस्या

Scanned with CamScanner

वेश्याकृति और उससे उद्धार की कथा कहता है और यह कथा सुमन को आधार बनाकर ही कही गई है।

अत: इस रूप में उपन्यासकार सेवा भावना में डूबती सुमन को जब तक सेवासदन में पहुंचाकर उसका कार्य-भार उसे नहीं संभलवा देता तब तक कथा को बढ़ाता जाता है। अत: इस रूप में हम कह सकते हैं कि सुमन ही इस उपन्यास में फल की भोक्ता है। सुमन के रूप में प्रेमचन्द ने आरम्भ से ही एक नारी का चित्रण किया है जिसमें सत असत का निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष में असत की क्षणिक विजय हो जाती

है परन्तु संघर्ष जारी रहता है और अन्त में सत की विजय हो जाती है।

इस प्रकार सुमन के सम्पूर्ण जीवन चरित्र के अध्ययन करने के बाद हमें ज्ञात होता है कि वह अपने चरित्र की पवित्रता के विषय में बहुत सजग रहती है। परिस्थितियों के प्रभाव स्वरूप उसका मानसिक अन्तर्द्वन्द बढ़ जाता है, पर वह शीघ्र ही अपनी भावनाओं पर काबू पा लेती है और शीघ्र ही सहज सामान्य होकर अपने आपको नई परिस्थिति में ढालने लगती है। इसीलिए हम उसके बारे में कह सकते हैं वह कीचड़ में कहीं नहीं फँसती, बल्कि कीचड़ में कमल की भाँति निस्पृह रहती हुई अपनी पवित्रता को सुरक्षित रखने में सफल रहती है।

× × × ×

Scanned with CamScanner